Answers to RHA/Set-2

खंड–'क' (अपठित बोध)

1. (*i*) (ग) 1, 2 और 3 सही हैं।

(*ii*) (ख) प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग सोच-समझकर करना

(*iii*) (ग) कथन सही है और कारण कथन की सही व्याख्या है।

(*iv*) पर्यावरण ही हमें स्वच्छ हवा, पानी, भोजन और आवास प्रदान करता है। अगर पर्यावरण प्रदूषित हो तो हमें साफ पानी, शुद्ध हवा और स्वच्छ वातावरण नहीं मिलेगा। इसके लिए सरकार द्वारा कई कदम उठाए गए हैं, जैसे वृक्षारोपण अभियान, स्वच्छता अभियान एवं पर्यावरण संरक्षण कानून।

(*v*) धरती पर जल की मात्रा सीमित है और उसका अति प्रयोग से पीने योग्य पानी की कमी हो रही है। जल प्रदूषण से नदियाँ, तालाब और भूमिगत जल दूषित हो रहे हैं जिसके कारण जलीय जीव खतरे में आए गए हैं इन्हीं कारणों से जल संरक्षण आवश्यक है। प्राकृतिक विधि से जल को संरक्षित कर ही पानी की कमी को दूर किया जा सकता है।

2. (*i*) (ग) बदली से

(*ii*) (ख) विरह के हो सकते हैं।

(*iii*) (ग) कथन सही है और कारण कथन की सही व्याख्या है।

(*iv*) बदली घिरती है, घुमड़ती है, बरसती है और नवजीवन प्रदान कर चली जाती है। वह कल उमड़ी थी तो आज अपना जल बरसाकर मिट गई। अब उसकी स्मृतियाँ भर शेष रह गई। इसी प्रकार मानव जीवन चिरस्थायी नहीं है।

(*v*) मानव जीवन क्षणिक है, वह चिरस्थायी नहीं है। संसार में किसी के आने या चले जाने से कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता। जो आज है, वह कल नहीं होगा। केवल उसकी स्मृतियाँ ही शेष रह जाएगी। परिवर्तन प्रकृति का नियम है।

खंड–'ख' (व्यावहारिक व्याकरण)

3. (*i*) मंदिर के विग्रहों को पता नहीं कितनी समझ है लेकिन वे रोज़ बदल-बदलकर मुलतानी, कल्याण, ललित और कभी भैरव रागों को सुनते रहते हैं।

(*ii*) हमने इतना हुड़दंग मचाया कि कॉलेज वालों को थर्ड इयर भी खोलना पड़ा।

(*iii*) सरल वाक्य

(*iv*) विशेषण आश्रित उपवाक्य

(*v*) शहनाई बजाने के लिए प्रयोग की जाने वाली रीड अंदर से पोली होती है।

4. (*i*) हालदार साहब के द्वारा चश्मेवाले की देशभक्ति का सम्मान किया गया।

(*ii*) भाववाच्य

(*iii*) सैनिकों ने शत्रुओं को हराया।

(*iv*) उनसे नमाज़ के बाद सज़दे में गिड़गिड़ाया जाता है।

(*v*) बालगोबिन भगत द्वारा मधुर गीत सुनाया गया।

5. (*i*) जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग

(*ii*) समुच्चयबोधक अव्यय, दो वाक्यों को जोड़ने का कार्य

(*iii*) संख्यावाचक विशेषण, एकवचन, पुल्लिंग 'साल' विशेष्य का विशेषण

(*iv*) कालवाचक क्रियाविशेषण, 'सोचता हूँ' क्रिया की विशेषता बताने का कार्य

(*v*) सकर्मक क्रिया, एकवचन, पुल्लिंग, वर्तमान काल

6. (*i*) उत्प्रेक्षा अलंकार

(*ii*) मानवीकरण अलंकार

(*iii*) उपमा अलंकार

(*iv*) रूपक अलंकार

(*v*) अतिशयोक्ति अलंकार

खंड–'ग' (पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक)

7. (*i*) (घ) कथन 2, 3 और 4 सही हैं।

(*ii*) (ग) कथन सही है और कारण कथन की सही व्याख्या है।

(*iii*) (ख) वहाँ इनकी कई पुश्तों ने शहनाई बजाई थी।

(*iv*) (ग) आनंदकानन

(*v*) (घ) कथन 2 और 4 सही हैं।

8. (क) मांगलिक अवसरों पर वातावरण में पवित्रता व आनंद भरने के लिए वाद्ययंत्रों से बजाई जाने वाली ध्वनि मंगलध्वनि कहलाती है। शहनाई मंगलध्वनि का प्रमुख वाद्य है। बिस्मिल्ला खाँ ने अपनी साधना से शहनाई को साध लिया था। तन्मयता के साथ शहनाई बजाकर वातावरण को मंगलपूरित करने में उन्हें महारथ हासिल थी। इन विशेषताओं के कारण उन्हें मंगलध्वनि का नायक कहा जाता है।

(ख) नेताजी की मूर्ति पर चश्मा बदल-बदलकर कैप्टन लगाता था। वह शारीरिक रूप से कमज़ोर था पर वह सच्चा देशभक्त था। नेता जी की बगैर चश्मेवाले मूर्ति बुरी लगती थी उसे पीड़ा पहुँचती थी। इसलिए वह नया चश्मा मूर्ति पर फिट कर देता। जब किसी ग्राहक को वह चश्मा चाहिए होता तो वह नेता जी की मूर्ति से क्षमा माँगते हुए चश्मा ग्राहक को देता और मूर्ति पर दूसरा लगा देता।

(ग) 'काशी में बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्ला खाँ एक-दूसरे के पूरक हैं'—इस कथन का आशय यही है कि काशी नगरी सदियों से 'बाबा विश्वनाथ' के धाम के रूप में जानी जाती है, किंतु बिस्मिल्ला खाँ साहब की शहनाई के सुरों से जुड़ जाने के कारण अब काशी उनके नाम से भी जानी जाती है। दूसरे, बिस्मिल्ला खाँ बाबा विश्वनाथ से बहुत गहराई से जुड़े हुए थे। काशी से बाहर होने पर भी वे दिन में एकबार अवश्य शहनाईवादन के समय बाबा विश्वनाथ की तरफ़ मुँह करके ही बैठते थे।

(घ) 'संस्कृति' पाठ का मूल स्वर सभ्यता को संस्कृति का परिणाम मानते हुए मानव-संस्कृति को अविभाज्य वस्तु सिद्ध करना है। लेखक ने यह भी सिद्ध किया है जो मनुष्य के लिए कल्याणकारी नहीं है, वह न सभ्यता है न संस्कृति। जो मनुष्य के लिए कल्याणकारी है, वही सभ्यता है और वही संस्कृति भी।

9. (*i*) (ग) केवल कथन 2 सही है।

(*ii*) (घ) कथन सही है किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं है।

(*iii*) (ख) शिशु के मधुर मुस्कान को देख पाया।

(*iv*) (ग) बिना पलक गिराए

(*v*) (ख) अपरिचित, परिचित

10. (क) यह पंक्ति 'आत्मकथ्य' कविता से ली गई है। कवि के जीवन में ऐसे सुखद क्षण भी आए थे, जब उसके जीवन में सुख की चाँदनी बिखरी थी। वह उन्मुक्त हँसी हँसता था, अपने मन की बात खुलकर कहता था। कवि उन मादक क्षणों, चाँदनी रातों का, मुक्त कंठ के हास-परिहास का तथा प्रेम भरी अनुभूतियों का वर्णन कैसे करे क्योंकि वे सुख के क्षण अल्पजीवी थे।

(ख) मिट्टी का गुण-धर्म है—उसमें मिले हुए खनिज पदार्थ, प्राकृतिक तत्व, उसकी उपजाऊ शक्ति और उसके वे विशेष गुण, जो मिट्टी को उर्वरा बनाते हैं और फ़सलें उगाने में सक्षम होते हैं। मिट्टी के गुण-धर्म कई कारणों से प्रभावित भी होते हैं— रासायनिक एवं कीटनाशक दवाओं के प्रयोग से, विषैले रसायनों को धरती पर गिराने से।

(ग) कवि ने बच्चे की मुसकान के सौंदर्य को निम्नलिखित बिंबों के माध्यम से व्यक्त किया है—

(*i*) बच्चे की मुसकान से मृतक में भी जान डाल देने संबंधी बिंब द्वारा।

(*ii*) तालाब छोड़कर झोंपड़ी में कमल के खिलने संबंधी बिंब द्वारा।

(*iii*) कठोर पत्थर पिघल कर जलधारा बनने संबंधी बिंब द्वारा।

(*iv*) बाँस या बबूल के वृक्षों से शेफालिका के फूल झरने संबंधी बिंब द्वारा।

(घ) संगतकार की आवाज़ में एक झिझक साफ़ महसूस की जा सकती है। वह लगातार यह भी कोशिश करता है कि उसका स्वर मुख्य गायक के स्वर से कहीं ऊँचा न हो जाए, परंतु यह उसकी असफलता नहीं है, न ही कमज़ोरी और न ही हीनता; अपितु यह तो उसकी मनुष्यता है, जिसके पीछे यही भावना छिपी रहती है कि दूसरे को हीन दिखाकर या दबाकर अपनी महानता प्रदर्शित करना मनुष्यता नहीं है। उसकी स्थिति या उसके स्वार्थहीन साथ का इसी दृष्टि से मूल्यांकन करना चाहिए। मुख्य गायक का प्रभाव बढ़ाने के लिए ही वह ऐसा करता है, जिससे उसके मानवतावादी विचारों का बोध होता है।

11. (क) आज की पीढ़ी आधुनिकता के रंग में रँगी हुई, प्रकृति को जाने-अनजाने नष्ट कर रही है। पर्वतीय स्थलों को गंदा कर, वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य को नष्ट कर रही है। वह चट्टानों पर नारे या विज्ञापन बनाकर उनके सौंदर्य को नष्ट कर देती है। लोग पर्यटन-स्थलों पर कूड़ा-करकट फेंककर उन्हें गंदा कर देते हैं। इसे रोकना बहुत ज़रूरी है, वरना हम स्वर्गीय सौंदर्य से वंचित रह जाएँगे। मैं पर्यावरण को स्वच्छ बनाए रखने के लिए लोगों को अधिक-से-अधिक वृक्षारोपण करने, पेड़ों को न काटने, प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों एवं उपकरणों के कम से कम प्रयोग आदि के प्रति जागरूक करने का प्रयास करूँगा।

(ख) बढ़ती उपभोक्तावादी सोच, एकल परिवार को प्राथमिकता, वैयक्तिकता से प्रभावित होना, संवेदनशीलता में कमी आना आदि माता-पिता को दूर रखने के प्रमुख कारण हैं। ऐसे लोगों को भावात्मक रूप से समझाने की आवश्यकता है, उन्हें यह कहकर समझाया जा सकता है कि जैसा वे अपने माता-पिता के साथ कर रहे हैं, वैसा कल उनके साथ भी हो सकता है। वे वृद्धाश्रम भेजने से पूर्व माता-पिता के स्थान पर स्वयं को रखकर देखें।

(ग) एक दिन हिरोशिमा की सड़क पर घूमते हुए लेखक ने एक जले हुए पत्थर पर एक लंबी उजली छाया को देखा जो एक मानव की थी। उस छाया को देखकर लेखक भीतर तक हिल गए। उन्हें लगा कि इतिहास जैसे भीतर कहीं सहसा एक जलते हुए सूर्य के समान उग आया और डूब गया। इस क्षण उन्हें लगा कि अणुबम-विस्फोट की उन्हें प्रत्यक्ष अनुभूति हो गई और वे स्वयं हिरोशिमा के विस्फोट के भुक्त-भोगी बन गए।

खंड–'घ' (रचनात्मक लेखन)

12. (क) **पाठ्यक्रम में नवाचार (डिजिटल साक्षरता)**

पाठ्यक्रम में नवाचार का अर्थ है—नई-नई विधियों एवं तरीकों को अपनाना। वर्तमान युग 21वीं सदी से आगे जा रहा है, जिसके लिए शिक्षा में नए पाठ्यक्रम और नई विधियों की आवश्यकता पड़ेगी। इस दृष्टि से वैश्विक स्तर पर किसी भी विद्यार्थी को सफल बनाने के लिए बहुत से ऐसे माध्यमों की आवश्यकता है जो कि उसके लिए सदी के साथ कदम से कदम मिलाने में सहायक सिद्ध हो सकें। इसके साथ ही वह अंतरर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी एक पहचान बना सके। इस संदर्भ में 'डिजिटल साक्षरता' का होना एक बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है। 'डिजिटल साक्षरता' का अर्थ है - इलेक्ट्रॉनिक के वे माध्यम जिनके कारण विद्यार्थी ऑनलाइन विधियों के साथ-साथ कंप्यूटरीकृत विधियों को भी अपना सकेगा। इसमें चैट जीपीटी, कृत्रिम बौद्धिकता ऐसे ही कुछ नए नवाचार हैं। इसके साथ-साथ पाठ्यक्रम में लाया गया बदलाव 'नई शिक्षा प्रणाली' के अंतर्गत

नए संदर्भों को जोड़ने और उनको क्रियान्वित करने का एक बेहतर मार्ग है। शिक्षा में कक्षा छठी से ही जो नई विधियाँ शामिल की गई हैं उनमें व्यावसायिक शिक्षण के अंतर्गत बच्चों को कोडिंग जैसे शिक्षण एवं प्रशिक्षण के माध्यम से बेहतर बनाना है ताकि वे अपने आने वाले समय में अपने लिए नए स्टार्टअप शुरू कर सकें। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि पाठ्यक्रम में नवाचार विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास में अत्यंत सहायक सिद्ध होगा जिससे आत्मनिर्भर भारत का वैश्विक स्तर पर एक श्रेष्ठ स्थान तो होगा ही साथ ही विद्यार्थी को एक सुदृढ़ व्यक्तित्व भी प्रदान होगा।

(ख) **सतत विकास के लक्ष्य**

वर्ष 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा अपने सदस्य देशों के साथ 17 ऐसे विकास के लक्ष्यों को चुना गया जिनके आधार पर भविष्य की तैयारी करना तो था ही साथ ही वर्तमान पीढ़ी की ज़रूरत को पूरा करना भी था। इन लक्ष्यों में जहाँ एक ओर विश्व में फैली हुई गरीबी, भुखमरी, स्वास्थ्य सुरक्षा और स्वस्थ जीवन जैसे मुद्दों को लेकर कारगर कदम उठाने जैसे बिंदुओं को निर्धारित किया गया वहीं संसार में शांति, न्याय व्यवस्था के साथ-साथ शहरी और ग्रामीण जीवन को भी सुदृढ़ बनाना था। इसके लिए एक ऐसे लचीले बुनियादी ढाँचे की आवश्यकता थी जिसमें औद्योगीकरण की एक महत्वपूर्ण भूमिका थी। जलवायु परिवर्तन से जहाँ विश्व का प्रत्येक देश जूझ रहा था, उसके लिए भी उचित कारगर कदम उठाना भी एक लक्ष्य था। थलीय, जलीय प्राणी इन सब की सुरक्षा और संरक्षण का मुददा भी एक महत्वपूर्ण कदम था। भारत के लिए ये लक्ष्य अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। भारत एक विकासशील देश है और इसके लिए भारत को विकसित देशों की श्रेणी में शामिल होने के लिए इन सब लक्ष्यों को बहुत ही गंभीरता से क्रियान्वित करना है। अंततः यही कहा जा सकता है कि यदि इन विकास के लक्ष्यों को प्रत्येक सरकार गंभीरतापूर्वक क्रियान्वित करेगी तो विश्व में होने वाले आर्थिक उतार-चढ़ाव, जलवायु परिवर्तन के साथ-साथ गरीबी, भुखमरी जैसी समस्याओं से निपटा जा सकेगा और सभी को पूर्ण रूप से समानता, शिक्षा, न्याय आदि का बंटवारा समान रूप से किया जा सकेगा जो कि प्रत्येक देश की स्वतंत्रता, अखंडता, एकता तथा चहुँमुखी विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

(ग) **ओलंपिक लक्ष्य एवं तैयारी**

ओलंपिक खेलों का इतिहास यूनानी सभ्यता से जुड़ा हुआ है। ओलंपिया पर्वत पर खेले जाने के कारण इन खेलों का नाम ओलंपिक पड़ा। अपने जीवन काल में प्रत्येक खिलाड़ी यह पदक जीतना चाहता है। भारत सरकार द्वारा 2014 में एक पहल की गई जिसके अंतर्गत ओलंपिक खेलों में भारत के अच्छे प्रदर्शन के सपने को साकार करने के लिए एक ऐसी योजना बनाई गई जिसके अंतर्गत खिलाड़ियों को मिशन ओलंपिक के अंतर्गत कुछ ऐसी सुविधाएँ दी गई जिससे वे ओलंपिक के लिए अच्छी तैयारी कर सकें। इस योजना का नाम है-'टारगेट ओलंपिक पोडियम योजना'। इससे बहुत से खिलाड़ियों को फ़ायदा हुआ। इस योजना के अंतर्गत चुने गए खिलाड़ियों के लिए कुछ ऐसे कार्यक्रमों को मंजूरी दी गई जिससे वे अपने खेल की तैयारी अच्छे से कर सकते हैं। ओलंपिक की विशेष तैयारी हेतु वित्तीय सहायता, अच्छे कोच और सुव्यवस्थित प्रशिक्षण कार्यक्रम आदि जिन भी सुविधाओं की जरूरत होती है वह सब खिलाड़ी को प्रदान किया जाता है। इस योजना से 2024 के पेरिस ओलंपिक में भारत ने 1 रजत, 5 कांस्य पदक जीतकर अपने आप को साबित किया।

13. (क) सेवा में

थानाध्यक्ष महोदय

य.र.ल. नगर, दिल्ली

दिनांक : 4 जून, 20xx

विषय– लड़कियों के प्रति बढ़ रहे अपराध के संबंध में।

महोदय

मैं दिल्ली के रोहिणी क्षेत्र की निवासी हूँ। मैं अपने मोहल्ले में लड़कियों के प्रति बढ़ रहे अपराध के संबंध में आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहती है।

पिछले कुछ दिनों से हमारे क्षेत्र में लड़कियों के साथ छेड़छाड़ के मामले बहुत अधिक बढ़ गए हैं। सभी लड़कियाँ सुबह अपने दफ़्तर या विद्यालय जाने के लिए घर से निकलती हैं तो रास्ते में जाते समय कुछ असामाजिक प्रवृत्ति के लोग भद्दे-भद्दे कमेंट्स करते हैं। लड़कियों के द्वारा विरोध करने पर उन्हें बाद में देख लेने की धमकी भी देते हैं। इन सभी समस्याओं के कारण सभी लड़कियों का घर से निकलना मुश्किल हो गया है।

मुझे पूरी आशा है कि आप हमारी इस परेशानी को दूर करने के लिए उचित कार्यवाही अवश्य करेंगे।

सधन्यवाद।

भवदीय

अंशिका

अथवा

(ख) परीक्षा भवन

नई दिल्ली

दिनांक : 21 मार्च, 20xx

प्रिय मित्र

सप्रेम नमस्कार

मुझे तुम्हारा पत्र मिला। यह जानकार मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि तुम बाढ़ पीड़ितों की मदद करने के अभियान में हिस्सा ले रहे हो। यह एक अच्छा कार्य है। हम भी यहाँ बाढ़ पीड़ितों की सेवा के अभियान में हिस्सा ले रहे हैं। हमने अपने कुछ दोस्तों के साथ मिलकर खाने के लिए भोजन सामग्री और कुछ कपड़े एकत्रित किए हैं। हमारे समूह के सभी सदस्यों ने विभिन्न क्षेत्रों में घर-घर जाकर बाढ़-पीड़ितों की मदद के लिए अधिक से अधिक सामान जुटाने का काम किया है। दल का नेता होने के कारण मुझे अतिरिक्त जिम्मेदारी सँभालनी पड़ी है। हमारे इस कार्य की क्षेत्र के लोगों ने और समाचार-पत्रों ने भी सराहना की है।

आशा है कि तुम भी अपने क्षेत्र में इस प्रकार के सामाजिक कार्य करके अपने दायित्व का पूर्ण निर्वहन करोगे।

तुम्हारा मित्र

अमन

14. (क) **कार्यालय सहायक के पद के लिए स्ववृत्त**

नाम	–	मिहिर गुप्ता
पिता का नाम	–	श्री राजेश कुमार गुप्ता
माता का नाम	–	श्रीमती रूपा गुप्ता
जन्मतिथि	–	14 मई, 1998

वर्तमान पता – B-5/22, रोहिणी, दिल्ली

स्थायी पता – उपर्युक्त

मोबाइल नं० – 9297xxxxxx

ई-मेल – mgupta@gmail.com

शैक्षणिक योग्यताएँ

क्र०सं०	परीक्षा/डिग्री/डिप्लोमा	वर्ष	विद्यालय/बोर्ड/महाविद्यालय/विश्वविद्यालय	विषय	श्रेणी	प्रतिशत
1.	दसवीं कक्षा	2014	अ.ब.स. विद्यालय सी.बी.एस.ई., दिल्ली	हिंदी, अंग्रेज़ी, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान,	प्रथम	69%
2.	बारहवीं कक्षा	2016	अ.ब.स. विद्यालय सी.बी.एस.ई., दिल्ली	हिंदी, अंग्रेज़ी, राजनीति विज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र	प्रथम	71%
3.	बी०ए० ऑनर्स	2019	श.ष.स. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय	अर्थशास्त्र	प्रथम	74%
4.	कंप्यूटर प्रोग्राम में डिप्लोमा	2020	इग्नू, नई दिल्ली	कंप्यूटर विज्ञान	प्रथम	75%

उपलब्धि

• महाविद्यालय में आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।

कार्यानुभव

• अ.ब.स. विद्यालय में विद्युत विभाग में सहायक कंप्यूटर ऑपरेटर के रूप में एक वर्ष से कार्यरत।

मैं प्रमाणित करता हूँ कि आवेदित पद के लिए सभी योग्यताएँ मुझमें है। मैं पूरी निष्ठा के साथ काम करूँगा।

धन्यवाद सहित

मिहिर गुप्ता

15 जनवरी, 20xx

अथवा

(ख) प्रेषक : abc@gmail.com

प्राप्तकर्ता : pqr@gmail.com

प्रतिलिपि (सी०सी०) : stv@gmail.com

गोपनीय प्रतिलिपि (बी०सी०सी०) : xyz@gmail.com

विषय : मच्छरों को मारने की दवाई के छिड़काव के संदर्भ में।

महोदय,

मैं विकासपुरी, दिल्ली की निवासी हूँ। आजकल मेरे मोहल्ले के सभी लोग बहुत अधिक मच्छर होने के कारण परेशान हैं। कुछ लोगों को तो मलेरिया और डेंगू भी हो गया है। बारिश होने के कारण जगह-जगह पानी इकट्ठा हो जाता है। कहीं-कहीं गंदगी होने के कारण भी ऐसा होता है। ये मच्छर पानी और खाने-पीने की चीजों को दूषित करते हैं और कई प्रकार की बीमारियाँ फैलाते हैं।

आपसे नम्र निवेदन है कि आप हमारे क्षेत्र में मच्छरों को मारने वाली दवाई का अधिक से अधिक छिड़काव कराएँ जिससे हम सबको इन मच्छरों से छुटकारा मिल सके।

कृपया मेल स्वीकार कीजिए।

धन्यवाद।

भवदीया

गार्वी

15. (क)

सेल **सेल** **सेल**

अब आपके शहर में सूती कपड़ों पर भारी सेल

सेल

बम्पर सेल

दो सूती दुपट्टों के साथ एक फ्री

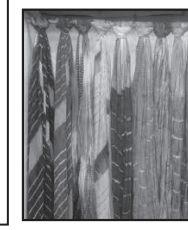

- दुपट्टे
- साड़ी व सूट

सूटों पर 50% की भारी छूट

✦ शीघ्र करें! ऑफर सीमित समय के लिए है

संपर्क करें : य.र.ल. नगर, मो. 8868xxxxxx

अथवा

(ख)

संदेश

दिनांक : 25 मई, 20xx

पूर्वाह्न : 8:00 बजे

आदरणीया माताजी,

सादर प्रणाम!

आप मेरे जीवन की प्रेरणा रही हैं। आपने कठिनाइयों से कभी भी न घबराते हुए जीवन पथ पर आगे बढ़ते रहने के लिए सदा ही मुझे प्रेरित किया है। आज मैं जो कुछ भी हूँ, आपकी वजह से ही हूँ।

मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि आप हमेशा खुश रहें और स्वस्थ रहे।

आपको मेरी तरफ से मदर्स-डे की ढेर सारी शुभकामनाएँ।

आपका सुपुत्र

क.ख.ग.